



RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग - 8

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था



RAS – PRE & MAINS

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था

S.No.	Chapter Name	Page No.
1.	भारतीय संविधान का निर्माण एवं संविधान सभा <ul style="list-style-type: none">• संविधान के कार्य• भारत के संविधान का विकास• संविधान सभा• संविधान सभा की समितियां• संविधान का प्रभाव में आना• संविधान सभा की आलोचना	1
2.	संविधान की मुख्य विशेषताएं <ul style="list-style-type: none">• भारतीय संविधान के भाग और अनुसूचियां	7
3.	उद्देश्यिका / प्रस्तावना <ul style="list-style-type: none">• प्रस्तावना से संबंधित प्रमुख शब्द• संविधान के एक भाग के रूप में प्रस्तावना	10
4.	मौलिक अधिकार <ul style="list-style-type: none">• संवैधानिक प्रावधान• मौलिक अधिकारों की उत्पत्ति• मौलिक अधिकारों की विशेषताएं• छह मौलिक अधिकार• रिट और उसके प्रकार• सशस्त्र बल एवं मौलिक अधिकार• मार्शल लॉ और मौलिक अधिकार• संविधान के भाग III के बाहर के अधिकार• मौलिक अधिकारों के अपवाद• मौलिक अधिकारों का महत्व	12
5.	राज्य के नीति निदेशक तत्व <ul style="list-style-type: none">• संवैधानिक प्रावधान• निदेशक सिद्धांतों की विशेषता• निदेशक सिद्धांतों का वर्गीकरण• नए निदेशक तत्व• निदेशक तत्वों की उपयोगिता• राज्य नीति के निदेशक तत्व का कार्यान्वयन• संविधान के भाग IV के बाहर निदेशक तत्व• मौलिक अधिकारों और नीति निदेशक तत्वों के बीच संघर्ष	31
6.	मौलिक कर्तव्य <ul style="list-style-type: none">• संवैधानिक प्रावधान• मौलिक कर्तव्य• मौलिक कर्तव्यों की विशेषताएं• मौलिक कर्तव्यों की आलोचना• मौलिक कर्तव्यों का महत्व• मौलिक कर्तव्यों पर वर्मा समिति की टिप्पणियां	37
7.	संवैधानिक संशोधन	39

	<ul style="list-style-type: none"> • संवैधानिक प्रावधान • संशोधन के प्रकार • संशोधन की प्रक्रिया • संविधान में संशोधन के ऐतिहासिक मामले 	
8.	संविधान का मूल ढांचा <ul style="list-style-type: none"> • उद्भव • मूल संरचना के घटक 	41
9.	राष्ट्रपति <ul style="list-style-type: none"> • संवैधानिक प्रावधान • राष्ट्रपति का चुनाव • राष्ट्रपति कार्यालय के लिए शपथ • राष्ट्रपति कार्यालय के लिए शर्तें • राष्ट्रपति कार्यालय की उन्मुक्तियां और विशेषाधिकार • राष्ट्रपति कार्यालय का कार्यकाल • राष्ट्रपति के विरुद्ध महाभियोग • राष्ट्रपति कार्यालय में रिक्ति • राष्ट्रपति की शक्तियाँ <ul style="list-style-type: none"> ○ कार्यकारी शक्तियाँ ○ विधायी शक्तियाँ ○ वित्तीय शक्तियाँ ○ न्यायिक शक्तियाँ ○ कूटनीतिक शक्तियाँ ○ सैन्य शक्तियाँ ○ आपातकालीन शक्तियाँ ○ राष्ट्रपति की वीटो शक्ति ○ राष्ट्रपति की अध्यादेशजारी करने की शक्ति ○ राष्ट्रपति की क्षमादान शक्ति ○ राष्ट्रपति की विवेकाधीन शक्ति 	45
10.	प्रधानमंत्री <ul style="list-style-type: none"> • संवैधानिक प्रावधान • शपथ • योग्यता • कार्यकाल • परिलब्धियां • प्रधानमंत्री की शक्तियां • राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री के बीच संबंध 	51
11.	केंद्रीय मंत्रिपरिषद <ul style="list-style-type: none"> • संवैधानिक प्रावधान • संयोजन • मंत्री की नियुक्ति • मंत्रियों की शपथ • मंत्रियों का वेतन • मंत्रियों की जिम्मेदारी • कैबिनेट बनाम केंद्रीय मंत्रिपरिषद • किचन कैबिनेट/आंतरिक कैबिनेट • छाया मंत्रिमंडल 	53

	<ul style="list-style-type: none"> • कैबिनेट समितियां 	
12.	संसदीय प्रणाली <ul style="list-style-type: none"> • संवैधानिक प्रावधान • संसदीय सरकार • संसदीय प्रणाली के गुण • संसदीय प्रणाली के दोष • भारतीय बनाम ब्रिटिश संसदीय प्रणाली का मॉडल 	57
13.	संसद <ul style="list-style-type: none"> • संसद की संरचना • संसद की सदस्यता • संसद के पीठासीन अधिकारी • संसद में नेता • संसद के सत्र • संसदीय कार्यवाही के उपकरण • संसद में विधायी प्रक्रिया • संसद में बजट • अनुदान • केंद्र सरकार के लिए निधियां • संसद की शक्तियां और कार्य • राज्यसभा की स्थिति • संसदीय विशेषाधिकार • संसद की संप्रभुता • संसदीय समितियाँ • संसदीय मंच • संसदीय समूह 	60
14.	उच्चतम न्यायालय <ul style="list-style-type: none"> • सर्वोच्च न्यायालय • उच्च न्यायालय • अधीनस्थ न्यायालय • न्यायिक समीक्षा • न्यायिक सक्रियता • जनहित याचिका • न्यायाधिकरण 	90
15.	भारत निर्वाचन आयोग <ul style="list-style-type: none"> • संवैधानिक प्रावधान • संयोजन • शक्तिया • कार्य • भारत निर्वाचन आयोग 	107
16.	नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक <ul style="list-style-type: none"> • संवैधानिक प्रावधान • पद की नियुक्ति और शपथ • शक्तियां और कर्तव्य • नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक का प्रतिवेदन • नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक और सार्वजनिक निगम • भारतीय नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक बनाम ब्रिटेन नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक 	109

	<ul style="list-style-type: none"> • विनोद राय (पूर्व नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक) की सिफारिशें • नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की आलोचना 	
17.	नीति आयोग <ul style="list-style-type: none"> • उद्देश्य • मार्गदर्शक सिद्धांत • संयोजन • कार्य • नीति आयोग की प्रासंगिकता • चिंता और चुनौतियां • उपलब्धियाँ • सूचकांक 	112
18.	केन्द्रीय सतर्कता आयोग <ul style="list-style-type: none"> • संरचना • नियुक्ति • कार्य • लोकपाल 	114
19.	लोकपाल और लोकायुक्त <ul style="list-style-type: none"> • पृष्ठभूमि • नियुक्ति • लोकपाल के क्षेत्राधिकार • लोकपाल की शक्तियां • कार्य • लोकायुक्त की मुख्य विशेषताएं • सीमाएँ 	116
20.	केन्द्रीय सूचना आयोग <ul style="list-style-type: none"> • संरचना • योग्यता • शक्तियां और कार्य 	119
21.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग <ul style="list-style-type: none"> • उद्देश्य • संयोजन • नियुक्ति • शक्तियां और कार्य • सीमाएँ 	121
22.	संघवाद <ul style="list-style-type: none"> • संघीय प्रणाली के विषय • भारतीय संघीय प्रणाली का आलोचनात्मक मूल्यांकन • भारतीय संघवाद के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियाँ 	124
23.	भारत में लोकतान्त्रिक राजनीति <ul style="list-style-type: none"> • लोकतंत्र शासन व्यवस्था के प्रकार • भारतीय लोकतंत्र के मूल्य • भारतीय लोकतंत्र के सम्मुख चुनौतियाँ • सुधारक उपाय • लोकतंत्र में नागरिकों की भूमिका • लोकतंत्र को मजबूत करने के लिए उठाए जाने वाले कदम • लोकतंत्रीकरण और असमानता 	127

24.	गठबंधन सरकारें <ul style="list-style-type: none"> विशेषताएं गठबंधन सरकार के अवगुण और गुण 	132
25.	राष्ट्रीय एकीकरण <ul style="list-style-type: none"> सीमा आयोग संसाधनों का विभाजन रियासतों का एकीकरण इंस्ट्रूमेंट ऑफ एक्सेशन विलय प्रक्रिया हैदराबाद जूनागढ़ कश्मीर कांग्रेस ने विभाजन को क्यों स्वीकार किया? राज्यों का पुनर्गठन भाषाई राज्यों के लिए आंदोलन भाषाई प्रांत आयोग (या धर आयोग) जेवीपी समिति राज्य पुनर्गठन आयोग (एसआरसी) या फजल अली आयोग राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 1956 के बाद बने नए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश शाह आयोग और हरियाणा, चंडीगढ़ और हिमाचल प्रदेश का गठन 	133
26.	राजनीतिक दल <ul style="list-style-type: none"> प्रकार विभिन्न राजनीतिक विचारधारा विश्व में दलीय व्यवस्था राष्ट्रीय और राज्य के राजनीतिक दलों को मान्यता क्षेत्रीय दल 	141
27.	नागरिक समाज एवं राजनीतिक आंदोलन <ul style="list-style-type: none"> नागरिक समाज नागरिक समाज की विशेषताएं नागरिक समाज की भूमिका नागरिक समाज के अंग भारत में नागरिक समाज 	144
28.	राष्ट्रीय अखंडता एवं सुरक्षा से जुड़े मुद्दे <ul style="list-style-type: none"> जातिवाद साम्प्रदायिकता प्रान्तीयता राजनीतिक दल विभिन्न भाषायें सामाजिक विभिन्नता आर्थिक विभिन्नता नेतृत्व का अभाव आधुनिक शिक्षा आंतरिक सुरक्षा के समक्ष उत्पन्न चुनौतियाँ आंतरिक सुरक्षा को बेहतर करने के उपाय 	147

	<ul style="list-style-type: none">• नक्सलवाद• समाधान (SAMADHAN) नीति• द्वितीय ARC द्वारा सुझाव:	
--	---	--

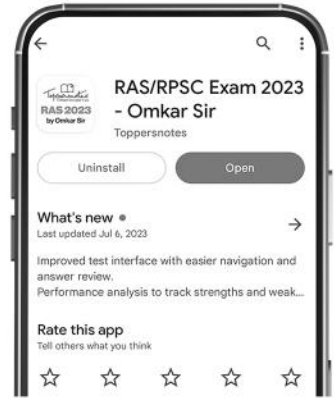
Dear Aspirant,
Thank you for making the right decision by choosing TopperNotes.
To use the QR codes in the book, Please follow the below steps:-



To install the app, scan the QR Code with your mobile phone camera or Google Lens



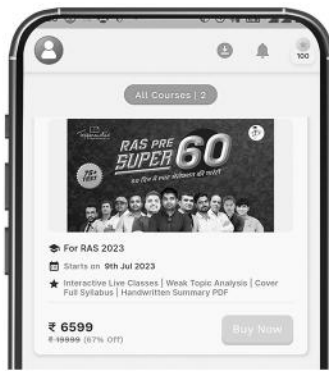
RAS Preparation APP by TopperNotes



Download the app from Google Play Store



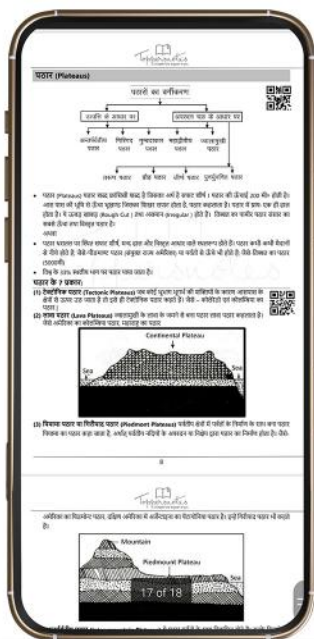
To Login enter your Phone Number



Choose your Course



Click on SCAN QR



Choose any QR CODE from book

- • Solution Videos
- • Concept Videos
- • Doubt Videos
- • Additional Learning Material
- • Topic wise practice
- • Weakness analysis
- • Rank Predictor
- • Test Practice

For any technical help, write us at hello@toppersnotes.com or whatsapp on [7665641122](https://wa.me/7665641122).

राजस्थान लोक सेवा आयोग

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (प्रारम्भिक) परीक्षा, 2023

:- परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम :-

भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था एवं शासन प्रणाली

भारतीय संविधान: दार्शनिक तत्व :-

- संविधान सभा, भारतीय संविधान की विशेषताएं, संवैधानिक संशोधन।
- उद्देशिका, मूल अधिकार, राज्य नीति के निदेशक तत्व, मूल कर्तव्य।

भारतीय राजनीतिक व्यवस्था :-

- राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्, संसद, उच्चतम न्यायालय और न्यायिक पुनरावलोकन।
- भारत निर्वाचन आयोग, नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक, नीति आयोग, केन्द्रीय सतर्कता आयोग, लोकपाल, केन्द्रीय सूचना आयोग एवं राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग।
- संघवाद, भारत में लोकतांत्रिक राजनीति, गठबंधन सरकारें, राष्ट्रीय एकीकरण

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएं संयुक्त प्रतियोगी (मुख्य) परीक्षा, 2023

—: परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम :—

इकाई I— भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, विश्व राजनीति एवं समसामयिक मामले

- भारत का संविधान : निर्माण, विशेषताएँ, संशोधन, मूल ढाँचा।
- वैचारिक सत्त्व : उद्देशिका, मूल अधिकार, राज्य की नीति के निदेशक तत्व, मूल कर्तव्य।
- संस्थात्मक ढाँचा - I : संसदीय प्रणाली, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्, संसद।
- संस्थात्मक ढाँचा - II : संघवाद, केन्द्र-राज्य संबंध, उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालय, न्यायिक पुनरावलोकन, न्यायिक सक्रियता।
- संस्थात्मक ढाँचा - III : भारत निर्वाचन आयोग, नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, संघ लोक सेवा आयोग, नीति आयोग, केन्द्रीय सतर्कता आयोग, केन्द्रीय सूचना आयोग, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग।
- राजनीतिक गत्यात्मकताएँ : भारतीय राजनीति में जाति, धर्म, वर्ग, नृजातीयता, भाषा एवं लिंग की भूमिका, राजनीतिक दल एवं मतदान व्यवहार, नागरिक समाज एवं राजनीतिक आंदोलन, राष्ट्रीय अखंडता एवं सुरक्षा से जुड़े मुद्दे, सामाजिक- राजनीतिक संघर्ष के संभावित क्षेत्र।
- राजस्थान की राज्य-राजनीति : दलीय प्रणाली, राजनीतिक जनांकिकी, राजस्थान में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के विभिन्न चरण, पंचायती राज एवं नगरीय स्वशासन संस्थाएँ।
- शीत युद्धोत्तर दौर में उदीयमान विश्व-व्यवस्था, संयुक्त राज्य अमरीका का वर्चस्व एवं इसका प्रतिरोध, संयुक्त राष्ट्र एवं क्षेत्रीय संगठन, अंतरराष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की गत्यात्मकता, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद एवं पर्यावरणीय मुद्दे।
- भारत की विदेश नीति : उद्विकास, निर्धारक तत्व, संयुक्त राज्य अमरीका, चीन, रूस, यूरोपीय संघ एवं पड़ोसी देशों के साथ भारत के संबंध, संयुक्त राष्ट्र, गुट निरपेक्ष आंदोलन, ब्रिक्स, जी-20, जी-20 वं सार्क में भारत की भूमिका।
- दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, पश्चिम एशिया एवं सुदूर पूर्व में भू-राजनीतिक एवं रणनीतिक मुद्दे तथा उनका भारत पर प्रभाव।
- **समसामयिक मामले** : राजस्थान, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय महत्व की समसामयिक घटनाएं, व्यक्ति एवं स्थान, खेलकूद से जुड़ी हाल की गतिविधियाँ।

1 CHAPTER

भारतीय संविधान का निर्माण, संविधान सभा



- संविधान नियमों, उपनियमों का एक ऐसा लिखित दस्तावेज है-
 - जिसके अनुसार सरकार का संचालन किया जाता है।
 - जो देश की राजनीतिक व्यवस्था का बुनियादी ढाँचा निर्धारित करता है।
 - जो राज्य की विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की स्थापना, उनकी शक्तियों तथा दायित्वों का सीमांकन एवं राज्य के मध्य संबंधों का विनियमन करता है।

संविधान के कार्य

- राजनीतिक समुदाय की सीमाओं को घोषित और परिभाषित करना।

- राजनीतिक समुदाय की प्रकृति और अधिकार को घोषित और परिभाषित करना।
- एक राष्ट्रीय समुदाय की पहचान और मूल्यों को व्यक्त करना।
- नागरिकों के अधिकारों और कर्तव्यों की घोषणा करना और उन्हें परिभाषित करना।
- सरकार की विधायी, कार्यकारी और न्यायिक शाखाएँ स्थापित करना।
- सरकार या उप-राज्य समुदायों के विभिन्न स्तरों के बीच शक्ति का वितरण करना।
- राज्य की आधिकारिक धार्मिक पहचान घोषित करना।
- विशेष रूप से सामाजिक, आर्थिक या विकासात्मक लक्ष्यों के लिए राज्यों को प्रतिबद्ध करना।

भारत के संविधान का विकास

भारत में कंपनी शासन (1773-1858)

<p>रेगुलेटिंग एक्ट, 1773</p> <p>* कंपनी के कर्मचारियों को निजी व्यापार तथा भारतीय लोगों से उपहार व रिश्वत लेना प्रतिबंधित किया गया।</p>	<ul style="list-style-type: none"> • बंबई तथा मद्रास प्रेसिडेंसी को बंगाल प्रेसिडेंसी के अधीन • बंगाल प्रेसिडेंसी में गवर्नर जनरल व चार सदस्यों वाली कार्यकारी परिषद की स्थापना • इस एक्ट के तहत बंगाल के पहले गवर्नर जनरल लॉर्ड वारेन हेस्टिंग्स थे। • बंगाल के गवर्नर को तीनों प्रेसिडेन्सियों का गवर्नर जनरल कहा जाता था। • भारत में केन्द्रीय प्रशासन की नींव रखी। • कलकत्ता में एक सुप्रीम कोर्ट की स्थापना (1774) की गई जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश एवं तीन अन्य न्यायाधीश थे। • भारत में कंपनी के राजस्व, नागरिक और सैन्य मामलों के संबंध में ब्रिटिश सरकार को रिपोर्ट करने के लिए कंपनी के निदेशक मंडल को आवश्यक कर दिया। 	
<p>संशोधन अधिनियम (बंदोबस्त कानून), 1781</p>	<ul style="list-style-type: none"> • 1781 के संशोधन अधिनियम ने सर्वोच्च न्यायालय के अधिकार क्षेत्र से गवर्नर जनरल तथा काउंसिल को मुक्त करने के साथ ही कंपनी के लोक सेवकों के द्वारा अपने कार्यकाल में संपन्न कार्यवाहियों के लिए मुक्त कर दिया गया। • कलकत्ता के सभी निवासियों को न्यायालय के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत कर दिया गया और न्यायालय द्वारा हिन्दू व मुस्लिमों को उनके निजी कानूनों के हिसाब से मामलों तय करने की व्यवस्था की गई। • न्यायालय को प्रतिवादी के व्यक्तिगत कानून का प्रशासन करने का अधिकार था। 	
<p>पिट्स इंडिया एक्ट, 1784</p>	<ul style="list-style-type: none"> • द्वैत शासन प्रणाली की स्थापना की। <ul style="list-style-type: none"> ○ कंपनी के वाणिज्यिक मामलों का प्रबंधन करने के लिए निदेशक मंडल को अनुमति दी। ○ अपने राजनीतिक मामलों का प्रबंधन करने के लिए नियंत्रण बोर्ड नामक निकाय का गठन किया गया। • ब्रिटिश नियंत्रित भारत में सभी नागरिक, सैन्य सरकार तथा राजस्व गतिविधियों के पर्यवेक्षण की शक्ति नियंत्रण बोर्ड को प्रदान की गई। 	
<p>चार्टर अधिनियम, 1813</p>	<ul style="list-style-type: none"> • भारत में कंपनी के व्यापार एकाधिकार को समाप्त किया गया। <ul style="list-style-type: none"> ○ अपवाद- चाय का व्यापार और चीन के साथ व्यापार को कंपनी के अधिकार क्षेत्र में ही रखा गया। • कर लगाने के लिए स्थानीय सरकारों को अधिकृत किया। 	



चार्टर 1833	अधिनियम,	<ul style="list-style-type: none"> • बंगाल का गवर्नर जनरल → भारत का गवर्नर जनरल (GGI) बना। • भारत के प्रथम गवर्नर-जनरल (लॉर्ड विलियम बेंटिक)। <ul style="list-style-type: none"> ○ सभी नागरिक और सैन्य शक्तियों को निहित किया गया। ○ संपूर्ण ब्रिटिश भारत की अनन्य विधायी शक्तियाँ। • कंपनी → विशुद्ध रूप से प्रशासनिक निकाय बन चुकी थी।
चार्टर 1853	अधिनियम,	<ul style="list-style-type: none"> • भारत का गवर्नर जनरल (GGI) की परिषद के विधायी और प्रशासनिक कार्यों का पृथक्करण किया गया। • गवर्नर जनरल के लिए नई विधान परिषद गठित करके उसे भारतीय विधान परिषद् नाम दिया गया जिसमें 6 नए पार्षद जोड़े गए। इसने मिनी संसद की तरह कार्य किया। • भारतीयों के लिए भी भारतीय सिविल सेवाओं के लिए खुली प्रतियोगिता प्रणाली की व्यवस्था की गई, और इसके लिए मैकाले समिति नियुक्त की गई। • भारतीय (केंद्रीय) विधान परिषद् में स्थानीय प्रतिनिधित्व प्रारंभ किया। (6 सदस्यों में से 4 मद्रास, बॉम्बे, बंगाल और आगरा की स्थानीय सरकारों द्वारा नियुक्त किए जायेंगे।)

भारत में क्राउन रूल (1858 से 1947)

भारत अधिनियम, 1858	सरकार	<ul style="list-style-type: none"> • ब्रिटिश सरकार ने भारत के शासन को अपने अंतर्गत ले लिया। • इसे भारत के शासन को अच्छा बनाने वाला अधिनियम भी कहा जाता है। • भारत का गवर्नर जनरल (GGI) के पद को भारत का वायसराय पदनाम दिया गया (प्रथम वायसराय - लॉर्ड कैनिंग)। <ul style="list-style-type: none"> ○ भारत का गवर्नर जनरल (GGI)- भारत में ब्रिटिश क्राउन के प्रतिनिधि। • बोर्ड ऑफ कंट्रोल और कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स को समाप्त करके द्वैध प्रणाली को समाप्त किया गया। • भारत के राज्य सचिव, पद का सृजन करके भारतीय प्रशासन पर पूर्ण अधिकार और नियंत्रण की शक्ति प्रदान की गई। • भारत सचिव की सहायता के लिए 15 सदस्यीय भारतीय परिषद का गठन किया गया।
भारतीय अधिनियम, 1861	परिषद	<ul style="list-style-type: none"> • वायसराय द्वारा विधान परिषद में भारतीयों को गैर-आधिकारिक सदस्यों के रूप में नामित करने के लिए व्यवस्था की गई। (लॉर्ड कैनिंग ने 3 भारतीयों को नामित किया- बनारस के राजा, पटियाला के महाराजा और सर दिनकर राव) • बंबई और मद्रास प्रेसीडेंसी को विधायी शक्तियाँ देकर विकेंद्रीकरण की शुरुआत की गई। • बंगाल, उत्तर-पश्चिमी प्रांत और पंजाब के लिए नई विधान परिषदों की स्थापना की। • वायसराय द्वारा परिषद के लिए नियम और आदेश बनाए जाएँगे। <ul style="list-style-type: none"> ○ लॉर्ड कैनिंग द्वारा पोर्टफोलियो प्रणाली को मान्यता प्रदान की गई। • वायसराय को आपातकाल में 6 महीने की वैधता के साथ अध्यादेश जारी करने के लिए अधिकृत किया गया।
भारतीय अधिनियम, 1892	परिषद	<ul style="list-style-type: none"> • केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों में गैर-सरकारी सदस्यों की संख्या में वृद्धि की गई। • विधान परिषदें बजट पर चर्चा कर सकती हैं और कार्यपालिका के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए अधिकृत किया। • केंद्रीय विधान परिषद और बंगाल चैम्बर ऑफ कॉमर्स में गैर सरकारी सदस्यों के नामांकन के लिए वायसराय की शक्तियों का प्रावधान। • इसके अलावा प्रांतीय विधान परिषदों में गवर्नर को जिला परिषद, नगरपालिका, विश्वविद्यालय, चैम्बर ऑफ कॉमर्स की सिफारिशों पर गैर-सरकारी सदस्यों को नियुक्त करने की शक्ति थी।
भारतीय अधिनियम, 1909	परिषद	<ul style="list-style-type: none"> • मॉर्ले-मिटो सुधार भी कहा जाता है। • केंद्रीय परिषद में सदस्य संख्या 16 से 60 हो गई और प्रांतीय विधान परिषदों में सदस्य संख्या एक समान नहीं थी।



	<ul style="list-style-type: none"> दोनों परिषदों के सदस्य अनुपूरक प्रश्न पूछ सकते थे, बजट पर प्रस्ताव पेश कर सकते थे। वायसराय और गवर्नर की कार्यकारी परिषद के साथ किसी भारतीय को संबद्ध होने का प्रावधान। (सत्येंद्र प्रसाद सिन्हा कानून सदस्य के रूप में प्रथम भारतीय) मुसलमानों के लिए सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व और अलग निर्वाचक मंडल का प्रावधान।
भारत सरकार अधिनियम, 1919	<ul style="list-style-type: none"> मोटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार भी कहा जाता है। केंद्रीय और प्रांतीय विषयों का पृथक्करण किया गया। हस्तांतरित प्रांतीय विषय- विधान परिषद के प्रति उत्तरदायी मंत्रियों की सहायता से गवर्नर द्वारा शासित। आरक्षित प्रांतीय विषय- गवर्नर द्वारा अपनी कार्यपालिका परिषद की सहायता से शासित। देश में द्विसदनीय व्यवस्था और प्रत्यक्ष निर्वाचन व्यवस्था की शुरुआत की। वायसराय की कार्यकारी परिषद के 6 में से 3 सदस्यों का भारतीय होना अनिवार्य था। सिखों, भारतीय ईसाइयों, एंग्लो-इंडियन और यूरोपीय लोगों के लिए भी पृथक निर्वाचक मंडल की व्यवस्था। संपत्ति, कर या शिक्षा के आधार पर लोगों को मताधिकार प्रदान करना। लंदन में भारत के उच्चायुक्त का कार्यालय बनाया गया। सिविल सेवकों की भर्ती के लिए एक केंद्रीय सेवा आयोग की स्थापना। प्रांतीय बजटों को केंद्रीय बजट से अलग किया और प्रांतीय विधानसभाओं को अपने बजट अधिनियमित करने के लिए अधिकृत किया गया।
भारतसरकार अधिनियम, 1935	<ul style="list-style-type: none"> अखिल भारतीय संघ की स्थापना जिसमें राज्य और रियासतें एक इकाई के रूप में थी। शक्तियों का तीन सूचियों में पृथक्करण किया गया: <ul style="list-style-type: none"> संघीय सूची (केंद्र के लिए, 59 विषय) राज्य सूची (राज्य के लिए, 54 विषय) समवर्ती सूची (दोनों के लिए, 36 विषय)। अवशिष्ट शक्तियाँ: वायसराय में निहित किया गया। प्रांतों में द्वैध शासन को समाप्त करके प्रांतीय स्वायत्तता की शुरुआत की गई। <ul style="list-style-type: none"> प्रांतों में उत्तरदायी जिम्मेदार सरकारों की शुरुआत की गई। केंद्र में द्वैध शासन को अपनाकर संघीय विषयों को हस्तांतरित विषयों और आरक्षित विषयों में विभाजित किया गया था। 11 में से 6 प्रांतों (बंगाल, बंबई, मद्रास, बिहार, असम और संयुक्त प्रांत) में द्विसदनीय व्यवस्था की शुरुआत हुई। दलित वर्गों, महिलाओं और श्रमिकों के लिए अलग निर्वाचक मंडल बनाकर साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व को विस्तार प्रदान किया गया। भारतीय परिषद को समाप्त कर दिया गया। भारत की मुद्रा और साख को नियंत्रित करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक की स्थापना की गई। संघीय लोक सेवा आयोग, प्रांतीय लोक सेवा आयोग एवं संयुक्त लोक सेवा आयोग की स्थापना। 1937 में संघीय-न्यायालय की स्थापना की गई।
भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947	<ul style="list-style-type: none"> माउंटबेटन योजना को तत्काल प्रभाव से लागू किया गया। भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करके इसे स्वतंत्र संप्रभु राष्ट्र के रूप में घोषित किया गया। 15 अगस्त 1947 से भारत को स्वतंत्र और संप्रभु राज्य घोषित किया। ब्रिटिश राष्ट्रमंडल से अलग होने के अधिकार के साथ भारत और पाकिस्तान को दो स्वतंत्र व संप्रभु राष्ट्रों के रूप में विभाजित किया गया। संविधान सभाओं को अपने संबंधित राष्ट्रों का संविधान बनाने और अपनाने का अधिकार दिया गया। भारत सचिव के पद को समाप्त कर दिया और राष्ट्रमंडल मामलों के राज्य सचिव को सभी शक्तियों को स्थानांतरित कर दिया गया।



- सिविल सेवकों की नियुक्ति तथा पदों में आरक्षण की प्रणाली को समाप्त कर दिया गया।
- इंग्लैंड के राजा से 'भारत के सम्राट' की उपाधि को समाप्त कर दिया गया।
- गवर्नर जनरल को विधेयकों को स्वीकृत करने के अधिकार से वंचित कर दिया लेकिन किसी भी विधेयक को स्वीकार करने का अधिकार प्राप्त था।
- भारत के गवर्नर जनरल तथा प्रांतीय गवर्नरों को राज्य के संवैधानिक प्रमुख के रूप में नियुक्त किया गया।

संविधान सभा

भारत की संविधान सभा की स्थापना के लिए कैबिनेट मिशन योजना का प्रावधान-

- कुल सदस्य = 389 आंशिक रूप से निर्वाचित और आंशिक रूप से मनोनीत।
 - 296 सीटें ब्रिटिश भारत को आवंटित की गईं।
 - 11 गवर्नर्स के प्रांतों से 292 सदस्य
 - 4 मुख्य आयुक्तों के प्रांतों में से 4 सदस्य
 - देसी रियासतों को 93 सीटें उनकी संबंधित जनसंख्या के अनुपात में आवंटित की गईं।
- प्रत्येक ब्रिटिश प्रांत को आवंटित सीटों का उनकी जनसंख्या के अनुपात में मुसलमानों, सिखों और सामान्य (अन्य) के बीच विभाजित किया जाना था।
- प्रत्येक समुदाय के प्रतिनिधियों का चुनाव → एकल संक्रमणीय मत का उपयोग करके आनुपातिक प्रतिनिधित्व द्वारा उस समुदाय के सदस्यों द्वारा चुने जाते हैं।
- रियासतों के प्रतिनिधियों का चयन - रियासतों के प्रमुखों द्वारा।
- सदस्यों का चयन - अप्रत्यक्ष रूप से प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा।
- जनता की भावनाओं को प्रस्तुत नहीं किया क्योंकि प्रांतीय विधानसभाओं के सदस्य स्वयं एक सीमित मताधिकार पर चुने गए थे। ब्रिटिश भारतीय प्रांतों के लिए संविधान सभा का चुनाव जुलाई-अगस्त, 1946 में हुआ।
 - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 208 सीटों पर विजयी,
 - मुस्लिम लीग ने 73 सीटों पर विजयी,
 - 15 सीटों पर निर्दलीय प्रतिनिधियों विजयी।
- रियासतों ने स्वयं को संविधान सभा से पृथक रखने का निर्णय लिया इसलिए उनकी सीटें नहीं भरी गईं।
- संविधान सभा में समाज के हर वर्ग के प्रतिनिधि थे, लेकिन तत्कालीन प्रमुख हस्तियों में से महात्मा गाँधी संविधान सभा के सदस्य नहीं थे।
- 28 अप्रैल, 1947 को 6 राज्यों के प्रतिनिधि संविधान सभा में शामिल हुए।
- 3 जून 1947 की माउंटबेटन योजना के बाद अधिकांश रियासतों ने विधानसभा में प्रवेश किया, बाद में भारतीय अधिराज्य से मुस्लिम लीग भी संविधान सभा में शामिल हुई।

संविधान सभा की कार्य प्रणाली

- पहली बैठक- 9 दिसंबर, 1946, केवल 211 सदस्यों ने भाग लिया।
- मुस्लिम लीग ने बैठक का बहिष्कार किया और एक अलग देश के रूप में पाकिस्तान की माँग की।
- डॉ. सच्चिदानंद सिन्हा (सबसे वरिष्ठ सदस्य) संविधान सभा के अस्थायी अध्यक्ष के रूप में चुने गए।
- डॉ. राजेंद्र प्रसाद संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित हुए।
- एच.सी. मुखर्जी और वी.टी. कृष्णामाचारी के रूप में उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

उद्देश्य प्रस्ताव

- 13 दिसंबर, 1946 को पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा संविधान सभा में प्रस्तुत किया गया। जिसे 22 जनवरी, 1947 को सर्वसम्मति से विधानसभा द्वारा स्वीकृत कर लिया गया।
- **महत्वपूर्ण प्रावधान-**
 - भारत स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य घोषित तथा भविष्य के प्रशासन को चलाने हेतु संविधान निर्माण की घोषणा।
 - भारत, ब्रिटिश भारत के क्षेत्रों का एक संघ होगा जिनकी संविधान सभा द्वारा निर्धारित निश्चित सीमाएँ होंगी तथा जिनके पास अवशिष्ट शक्तियाँ होंगी और संघ में निहित सरकार और प्रशासन की सभी शक्तियों के अलावा सारी शक्तियाँ इन राज्यों में निहित होंगी।
 - संप्रभु स्वतंत्र भारत को सभी शक्तियाँ और अधिकार भारत की जनता से प्राप्त होंगे।
 - भारत के सभी लोगों को न्याय, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अवसर की समता और कानून के समक्ष विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, आस्था, संघ और कार्य की स्वतंत्रता अल्पसंख्यकों, दलितों, पिछड़े और आदिवासी क्षेत्रों के लोगों के लिए पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की जाएगी।
 - न्याय और सभ्य राष्ट्रों के कानून के अनुसार गणराज्य के क्षेत्र और भूमि, समुद्र और वायु पर उसके संप्रभु अधिकारों की अखंडता बनाए रखी जाएगी।
 - इस देश को दुनिया में अधिकार और सम्मानित स्थान दिलाया जायेगा साथ ही विश्व शांति को बढ़ावा देने और मानव जाति के कल्याण के लिए अपना पूर्ण और इच्छुक योगदान दिया जायेगा।



भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 द्वारा परिवर्तन

- संविधान सभा → संविधान बनाने के लिए पूरी तरह से संप्रभु निकाय बनाया गया।
- संविधान सभा: एक विधायी निकाय बन गया। जो कि संविधान बनाने और देश के लिए सामान्य कानून बनाने के लिए जिम्मेदार।
 - संविधान सभा के रूप में → डॉ. राजेंद्र प्रसाद की अध्यक्षता में।
 - एक विधायिका के रूप में → जी.वी. मावलंकर की अध्यक्षता में (26 नवंबर, 1949 तक)।
- मुस्लिम लीग संविधान सभा से अलग हो गई।
 - संविधान सभा की कुल सदस्य संख्या 389 से घटाकर 299 रह गई।

संविधान सभा द्वारा निष्पादित अन्य कार्य-

- मई, 1949 में राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता की पुष्टि की।
- 22 जुलाई, 1947 को भारत के राष्ट्रीय ध्वज को अपनाया गया।
- 24 जनवरी, 1950 को भारत के राष्ट्रगान को अपनाया गया।
- 24 जनवरी, 1950 को डॉ. राजेंद्र प्रसाद को भारत के पहले राष्ट्रपति के रूप में चुना गया।
- 24 जनवरी, 1950 को संविधान सभा ने अपना अंतिम सत्र आयोजित किया लेकिन 26 जनवरी, 1950 से 1951-52 में पहले आम चुनाव होने तक अंतरिम संसद के रूप में कार्य जारी रखा।

संविधान सभा की समितियाँ

	समिति	अध्यक्षता
प्रमुख समितियाँ 	संघ शक्ति समिति	जवाहर लाल नेहरू
	संघीय संविधान समिति	जवाहर लाल नेहरू
	प्रारूप समिति	डॉ. बी.आर. अम्बेडकर
	प्रांतीय संविधान समिति	सरदार पटेल
	मौलिक अधिकारों, अल्पसंख्यकों व जनजातीय और बहिष्कृत क्षेत्रों के लिए सलाहकार समिति – 5 उप समितियाँ	सरदार पटेल
	(i) मौलिक अधिकार उप-समिति	जे. बी. कृपलानी
	(ii) अल्पसंख्यक उप समिति	एच. सी. मुखर्जी
	(iii) उत्तर-पूर्व सीमांत जनजातीय क्षेत्र (असम के अलावा) और आंशिक रूप से बहिष्कृत क्षेत्र उप-समिति	गोपीनाथ बरदोई
	(iv) बहिष्कृत और आंशिक रूप से बहिष्कृत क्षेत्र (असम के सिंचित क्षेत्रों के अलावा) उप-समिति	ए. वी. ठक्करी
	(v) उत्तर-पश्चिम फ्रंटियर जनजातीय क्षेत्र उप-समिति	
	राज्यों के लिए समिति (राज्यों के समझौता करने के लिए)	जवाहर लाल नेहरू
	प्रक्रिया नियम समिति	डॉ. राजेंद्र प्रसाद
	संचालन समिति	डॉ. राजेंद्र प्रसाद
लघु समितियाँ	वित्त और कर्मचारी समिति	डॉ. राजेंद्र प्रसाद
	प्रत्यायक समिति	अलादि कृष्णास्वामी अय्यर
	सदन समिति	बी. पट्टाभिषीतारमैय्या
	कार्य संचालन समिति	डॉ. के.एम. मुंशी
	संविधान सभा के कार्यों संबंधी समिति	जी.वी. मावलंकर
	सर्वोच्च न्यायालय के लिये तदर्थ समिति	एस. वरदाचारी (सभा के सदस्य नहीं थे)
	राष्ट्र ध्वज सम्बन्धी तदर्थ समिति	डॉ. राजेंद्र प्रसाद
	मुख्य आयुक्तों के प्रांतों के लिए समिति	बी. पट्टाभिषीतारमैय्या
	संघीय संविधान के वित्तीय प्रावधानों संबंधी समिति	नलिनी रंजन सरकार (सभा के सदस्य नहीं थे)
भाषाई प्रांत आयोग	एस. के. डार (सभा के सदस्य नहीं थे)	



	प्रारूप संविधान की जाँच के लिए विशेष समिति नागरिकता पर तदर्थ समिति	जवाहरलाल नेहरू एस. वरदाचारी (जो सभा के सदस्य नहीं थे)
	प्रेस दीर्घा समिति	उषा नाथ सेन

प्रारूप समिति-

- 29 अगस्त 1947 को नए संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए स्थापित किया गया था।
- समिति सदस्य : 7
 - अध्यक्ष: डॉ. बी.आर. अम्बेडकर।
 - एन गोपालस्वामी अय्यंगर।
 - अल्लादी कृष्णास्वामी अय्यर।
 - डॉ. के.एम. मुंशी।
 - सैयद मोहम्मद सादुल्ला।
 - एन. माधव राव (बी. एल. मित्र द्वारा स्वास्थ्य कारणों से इस्तीफा देने पर उनकी जगह ली)।
 - टी. टी. कृष्णामाचारी (1948 में डी. पी. खेतान की मृत्यु के बाद उनकी जगह ली)।
- फरवरी, 1948 में संविधान का पहला प्रारूप प्रकाशित किया गया।
- अक्टूबर, 1948 में दूसरा प्रारूप हुआ।

संविधान का प्रभाव में आना

- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर ने 4 नवंबर, 1948 को अंतिम प्रारूप पेश किया।
- संविधान पहली बार पढ़ा गया, और पाँच दिन तक आम चर्चा हुई।
- संविधान पर दूसरी बार 15 नवंबर, 1948 से विचार होना शुरू हुआ।
- तीसरी बार 14 नवंबर, 1949 से विचार होना शुरू हुआ।
- 26 नवंबर, 1949 को संविधान के प्रारूप को पारित किया गया।
- 26 नवंबर 1949 को अपनाए गए प्रारूप संविधान में प्रस्तावना, 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियाँ निहित थीं।

संविधान का प्रवर्तन-

- 395 अनुच्छेद।
- 8 अनुसूचियाँ।
- अनुच्छेद 5, 6, 7, 8, 9, 60, 324, 366, 367, 379, 380, 388, 391, 392 और 393 में निहित। नागरिकता, चुनाव, अंतरिम संसद, अस्थायी और संक्रमणकालीन प्रावधान और संक्षिप्त शीर्षक 26 नवंबर, 1949 को लागू। तथा शेष प्रावधान 26 जनवरी, 1950 (गणतन्त्र दिवस) को लागू हुए।

- संविधान को अपनाने के साथ, भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 और भारत सरकार अधिनियम, 1935 के सभी प्रावधान निरस्त कर दिए गए।
- एबोलिशन ऑफ़ प्रिवी काउंसिल ज्यूरिडिक्शन एक्ट (1949) लागू रहा।

संविधान सभा की आलोचना-

- प्रतिनिधि निकाय नहीं - सीमित मताधिकार द्वारा चुनाव के कारण जनादेश प्रतिबिंबित नहीं हुआ।
- एक संप्रभु निकाय नहीं - क्योंकि इसका गठन ब्रिटिश सरकार के प्रस्तावों के आधार पर किया गया था और उनकी अनुमति से इसकी बैठक आयोजित की गई थी।
- अमेरिकी संविधान (केवल 4 महीने) की तुलना में संविधान बनाने में अधिक समय लगा।
- कांग्रेस का प्रभुत्व रहा।
- वकीलों और राजनेताओं का वर्चस्व रहा।
- हिंदुओं का वर्चस्व रहा।

- एस .एन. मुखर्जी - संविधान सभा के मुख्य प्रारूपकार (चीफ़ ड्राफ्टमैन)।
- प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा - सुलेखक (कैलिग्राफर) - संविधान के मूल शब्दों को प्रवाहित इटैलिक शैली में लिखा गया।
- नंद लाल बोस और बिउहर राममनोहर सिन्हा सहित शांति निकेतन के कलाकारों द्वारा सुशोभित और सजाया गया।
- हिंदी संस्करण की सुलेख = वसंत कृष्ण वैद्य।
 - सजाया और प्रकाशित = नंद लाल बोस।
- हाथी- संविधान सभा की प्रतीक मुहर।
- मूल रूप से भारत के संविधान में हिंदी भाषा में संविधान के एक आधिकारिक विषय वस्तु से संबंधित कोई प्रावधान नहीं किया था।
 - हिंदी प्रारूप- 1987 के 58वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा बनाया गया जिसने संविधान के अंतिम भाग XXII में एक नया अनुच्छेद 394-क जोड़ा गया।

2

CHAPTER

संविधान की विशेषताएँ

- सबसे लंबा लिखित संविधान - इसमें शामिल हैं -
 - केंद्र और राज्यों व उनके अंतर्संबंधों के लिए अलग प्रावधान।
 - दुनिया के कई स्रोतों और संविधानों से लिए गये प्रावधान।

देशों	भारतीय संविधान की अन्य संविधानों से प्रेरित विशेषताएँ
ऑस्ट्रेलिया	<ul style="list-style-type: none"> • समवर्ती सूची • व्यापार, वाणिज्य और समागम की स्वतंत्रता • संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक
कनाडा	<ul style="list-style-type: none"> • एक मजबूत केंद्र के साथ संघीय व्यवस्था • केंद्र में अवशिष्ट शक्तियों का निहित होना • केंद्र द्वारा राज्यों के राज्यपालों की नियुक्ति • उच्चतम न्यायालय का सलाहकार क्षेत्राधिकार
आयरलैंड	<ul style="list-style-type: none"> • राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत • राज्यसभा के लिए सदस्यों का नामांकन • राष्ट्रपति के चुनाव की विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया
सोवियत संघ/रूस	<ul style="list-style-type: none"> • मौलिक कर्तव्य • प्रस्तावना में न्याय का आदर्श (सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक)
ब्रिटेन	<ul style="list-style-type: none"> • संसदीय सरकार • विधि का शासन • विधायी प्रक्रिया • एकल नागरिकता • कैबिनेट प्रणाली • परमाधिकार रिट • संसदीय विशेषाधिकार • द्विसदन
जापान	<ul style="list-style-type: none"> • विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया
अमेरिका	<ul style="list-style-type: none"> • मौलिक अधिकार • न्यायपालिका की स्वतंत्रता • न्यायिक समीक्षा • राष्ट्रपति का महाभियोग • सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों को हटाना • उपराष्ट्रपति का पद
जर्मनी (वाइमर)	<ul style="list-style-type: none"> • आपातकाल के दौरान मौलिक अधिकारों का निलंबन
दक्षिण अफ्रीका	<ul style="list-style-type: none"> • भारतीय संविधान में संशोधन की प्रक्रिया • राज्यसभा के सदस्यों का चुनाव
फ्रांस	<ul style="list-style-type: none"> • गणतंत्र • प्रस्तावना में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्श

- अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, महिलाओं, बच्चों और पिछड़े क्षेत्रों के लिए अलग प्रावधान।
- अधिकारों की विस्तृत सूची, राज्य की नीति के निदेशक तत्व और प्रशासन प्रक्रियाओं का विवरण।
- मूल रूप से (1949) में एक प्रस्तावना, 395 लेख (22 भागों में विभाजित) और 8 अनुसूचियाँ थीं।
- वर्तमान (2019) में, इसमें एक प्रस्तावना, 25 भाग, 470 अनुच्छेद, 12 अनुसूचियाँ शामिल हैं।
- कठोरता और लचीलेपन का अनूठा मिश्रण -
 - कुछ हिस्सों में सामान्य कानून बनाने की प्रक्रिया द्वारा संशोधन किया जा सकता है, जबकि कुछ प्रावधानों को उस सदन की कुल सदस्यता के बहुमत से और उस सदन के उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम दो-तिहाई सदस्यों के बहुमत से संशोधित किया जा सकता है।
 - कुछ संशोधनों को राष्ट्रपति के समक्ष स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किए जाने से पहले कम से कम आधे राज्यों के विधानमंडलों द्वारा अनुसमर्थित करने की भी आवश्यकता होती है।
- भारत एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और गणतंत्र के रूप में- भारत अपने लोगों द्वारा सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के आधार पर अपने चुने हुए प्रतिनिधियों के माध्यम से शासित होता है।
- सरकार की संसदीय प्रणाली- संसद मंत्रिपरिषद के कामकाज को नियंत्रित करती है।
 - कार्यपालिका विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है और जब तक उसे विधायिका का विश्वास प्राप्त है तब तक वह सत्ता में बनी रहती है।
 - भारत के राष्ट्रपति, जो पांच साल तक पद पर बने रहते हैं, नाममात्र, नाममात्र या संवैधानिक प्रमुख (कार्यकारी) होते हैं।
 - पीएम वास्तविक कार्यकारी और मंत्रिपरिषद के प्रमुख होते हैं जो सामूहिक रूप से निचले सदन (लोकसभा) के लिए जिम्मेदार होते हैं।
- एकल नागरिकता- संघ द्वारा प्रदान की जाने वाली एकल नागरिकता को पूरे भारत में सभी राज्यों द्वारा मान्यता प्राप्त है।



- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की पद्धति के माध्यम से भारत में राजनीतिक समानता स्थापित करता है जो 'एक व्यक्ति एक वोट' के आधार पर कार्य करता है।
 - प्रत्येक भारतीय जिसकी आयु 18 वर्ष या उससे अधिक है, किसी जाति, लिंग, नस्ल, धर्म या स्थिति के बावजूद चुनाव में मतदान करने का अधिकार है।
- स्वतंत्र और एकीकृत न्यायिक प्रणाली- कार्यपालिका और विधायिका के प्रभाव से मुक्त।
 - न्याय व्यवस्था के शीर्ष के रूप में सर्वोच्च न्यायालय जिसके नीचे उच्च न्यायालय और अधीनस्थ न्यायालय आते हैं।
- मौलिक अधिकार, मौलिक कर्तव्य और राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत -
 - मौलिक अधिकार पूर्ण नहीं हैं, लेकिन स्वयं संविधान द्वारा परिभाषित सीमाओं के अधीन हैं और ये न्यायालय में प्रवर्तनीय हैं।
 - राज्य के नीति निदेशक तत्व शासन के संबंध में राज्यों द्वारा पालन किए जाने वाले दिशानिर्देश हैं और न्यायालय में प्रवर्तनीय नहीं हैं।
 - 42 वें संशोधन द्वारा जोड़े गए मौलिक कर्तव्य नैतिक विवेक हैं जिनका नागरिकों को पालन करना चाहिए।
- एक मजबूत केंद्रीकरण प्रवृत्ति के साथ संघ- भारत विनाशकारी राज्यों के साथ एक अविनाशी संघ है। जिसका अर्थ है कि यह आपातकाल के समय एकात्मक चरित्र प्राप्त करता है।
- न्यायिक समीक्षा के साथ संसदीय सर्वोच्चता को संतुलित करना- न्यायिक समीक्षा की शक्ति के साथ एक स्वतंत्र न्यायपालिका।

भारतीय संविधान के भाग और अनुसूचियाँ



भाग	विषय - वस्तु	संबंधित अनुच्छेद
I	संघ और उसके क्षेत्र	1- 4
II	नागरिकता	5 - 11
III	मौलिक अधिकार	12 - 35
IV IV-A	राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत मौलिक कर्तव्य	36 - 51 51(A)
V	केंद्र सरकार	52 - 151
	अध्याय I - कार्यपालिका	52 - 78
	अध्याय II - संसद	79 - 122
	अध्याय III - राष्ट्रपति की विधायी शक्तियाँ	123 124 - 147

	अध्याय IV - संघ की न्यायपालिका अध्याय V - भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक	148 - 151
VI	राज्य सरकारें	152 - 237
	अध्याय I - सामान्य	152
	अध्याय II - कार्यपालिका	153 - 167
	अध्याय III - राज्य विधानमंडल	168 - 212
	अध्याय IV - राज्यपाल की विधायी शक्तियाँ	213
	अध्याय V - उच्च न्यायालय	214 - 232
	अध्याय VI - अधीनस्थ न्यायालय	233 - 237
VII	राज्यों से सम्बंधित पहली अनुसूची का खंड-ख (7 वें संशोधन अधिनियम द्वारा निरस्त)	238 निरस्त
VIII	केंद्र शासित प्रदेश	239 - 242
IX	पंचायतें	243 - 243(O)
IX-A	नगर पालिकाएं	243(P) - 243(ZG)
IX-B	सहकारी समितियां	243(ZH) - 243(ZT)
X	अनुसूचित और जनजातीय क्षेत्र	244 - 244(A)
XI	संघ और राज्यों के बीच संबंध	245 - 263
	अध्याय I - विधायी संबंध	245 - 255
	अध्याय II - प्रशासनिक संबंध	256 - 263
XII	वित्त, संपत्ति, अनुबंध और वाद	264 - 300(A)
	अध्याय I - वित्त	264- 291
	अध्याय II - ऋण लेना	292 -293
	अध्याय III - संपत्ति, अनुबंध, अधिकार, दायित्व, दायित्व और वाद	294- 300
	अध्याय IV - संपत्ति का अधिकार	300-A
XIII	भारत के क्षेत्र के भीतर व्यापार, वाणिज्य और समागम	301 -307
XIV	संघ और राज्यों के अधीन सेवाएं	308 -323
	अध्याय I - सेवाएं	308 -314
	अध्याय II - लोक सेवा आयोग	315- 323
XIV-A	अधिकरण	323(A) - 323(B)
XV	निर्वाचन	324 - 329(A)
XVI	कुछ वर्गों से संबंधित विशेष प्रावधान	330 - 342
XVII	राजभाषा	343 -351
	अध्याय I - संघ की भाषा	343- 344
	अध्याय II - क्षेत्रीय भाषाएँ	345 -347
	अध्याय III- उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा	348 -349
	अध्याय IV- विशेष निदेश	350 -351
XVIII	आपातकालीन प्रावधान	352 -360
XIX	विविध (प्रकीर्ण)	361 -367



XX	संविधान का संशोधन	368
XXI	अस्थायी, संक्रमणकालीन और विशेष उपबंध	369-392
XXII	संक्षिप्त नाम, प्रारंभ, हिंदी में प्राधिकृत पाठ और निरसन	393-395

अनुसूचियां संविधान में वे सूचियां हैं जो नौकरशाही गतिविधि और सरकार की नीति को वर्गीकृत और सारणीबद्ध करती हैं।

संख्या	विषय - वस्तु
पहली अनुसूची	1. राज्यों के नाम और उनके अधिकार क्षेत्र। 2. केंद्र शासित प्रदेशों के नाम और उनका विस्तार (सीमाएँ)।
दूसरी अनुसूची	परिलब्धियों पर भत्तों, विशेषाधिकारों आदि से संबंधित प्रावधान 1. भारत के राष्ट्रपति 2. राज्यों के राज्यपाल 3. लोकसभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष 4. राज्य सभा के सभापति और उपसभापति 5. राज्यों में विधानसभा के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष 6. राज्यों में विधान परिषद के सभापति और उपसभापति 7. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश 8. उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश 9. भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
तीसरी अनुसूची	शपथ या प्रतिज्ञान के प्रारूप 1. केंद्रीय मंत्री 2. संसद के चुनाव के लिए उम्मीदवार 3. संसद सदस्य 4. सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश 5. भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक 6. राज्य के मंत्री 7. राज्य विधानमंडल के चुनाव के लिए उम्मीदवार 8. राज्य विधानमंडल के सदस्य 9. उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश
चौथी अनुसूची	राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को राज्यसभा में सीटों का आवंटन।
पांचवी अनुसूची	अनुसूचित क्षेत्रों और अनुसूचित जनजातियों के प्रशासन और नियंत्रण से संबंधित प्रावधान।
छठी अनुसूची	असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिजोरम राज्यों में जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित प्रावधान।
सातवीं अनुसूची	सूची I (संघ सूची), सूची II (राज्य सूची) और सूची III (समवर्ती सूची) के संदर्भ में संघ और राज्यों के बीच शक्तियों का विभाजन। वर्तमान में, संघ सूची में 100 विषय (मूल रूप से 97), राज्य सूची में 61 विषय (मूल रूप से 66) और समवर्ती सूची में 52 विषय (मूल रूप से 47) शामिल हैं।
आठवीं अनुसूची	संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त भाषाएँ। मूल रूप से इसमें 14 भाषाएँ थीं लेकिन वर्तमान में 22 भाषाएँ

	हैं। वे हैं - असमिया, बांग्ला, बोडो, डोगरी (डोंगरी), गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मैथिली, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओड़िया, पंजाबी, संस्कृत, संथाली, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू। सिंधी को 1967 के 21वें संशोधन अधिनियम द्वारा जोड़ा गया। कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को 1992 के 71वें संशोधन अधिनियम द्वारा जोड़ा गया और बोडो, डोंगरी, मैथिली और संथाली को 92वें संशोधन अधिनियम 2003 द्वारा जोड़ा गया था।
नौवीं अनुसूची	भूमि सुधार और जमींदारी व्यवस्था के उन्मूलन से संबंधित राज्य विधानसभाओं और अन्य मामलों से निपटने वाली संसद के अधिनियम और विनियम (मूल रूप से 13 लेकिन वर्तमान में 282)। मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर इसमें शामिल कानूनों को न्यायिक जांच से बचाने के लिए इस अनुसूची को प्रथम संशोधन (1951) द्वारा जोड़ा गया था। हालांकि, 2007 में, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला सुनाया कि 24 अप्रैल, 1973 के बाद इस अनुसूची में शामिल कानूनों की न्यायिक समीक्षा की जा सकती है।
दसवीं अनुसूची	दलबदल के आधार पर संसद और राज्य विधानमंडलों के सदस्यों की अयोग्यता से संबंधित प्रावधान। इस अनुसूची को 1985 के 52वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा जोड़ा गया, जिसे दलबदल विरोधी कानून के रूप में भी जाना जाता है।
ग्यारहवीं अनुसूची	पंचायतों की शक्तियों, अधिकार और जिम्मेदारियों को निर्दिष्ट करता है। इसमें 29 विषय हैं। इस अनुसूची को 1992 के 73वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा जोड़ा गया था।
बारहवीं अनुसूची	नगर पालिकाओं की शक्तियों, अधिकार और जिम्मेदारियों को निर्दिष्ट करता है। इसमें 18 विषय हैं। यह अनुसूची 1992 के 74वें संशोधन अधिनियम द्वारा जोड़ी गई थी।



भारतीय संविधान की प्रस्तावना/उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न, समाजवादी, पंथ निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

- संविधान का परिचय या प्रस्तावना, संविधान के लिए दिशानिर्देश प्रदान करता है।
- संविधान के आधार के रूप में बुनियादी दर्शन और मौलिक मूल्यों का प्रतीक है।
- संविधान के संस्थापकों के सपनों और आकांक्षाओं को दर्शाता है।
- शेष संविधान के लागू होने के बाद अधिनियमित किया गया था।
- न ही विधायिका की शक्ति का स्रोत है और न ही कोई निषेधक।
- गैर-न्यायसंगत कानून की अदालतों में लागू करने योग्य नहीं।
- बुनियादी ढाँचे को बदले बिना संशोधित किया जा सकता है।

प्रस्तावना के मूल तत्व

- संविधान के अधिकार का स्तोत्र → भारत के लोग।
- भारत की प्रकृति भारत को संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक और गणतांत्रिक राज्य घोषित करता है।
- संविधान के उद्देश्य: न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व
- संविधान को अपनाने की तिथि - यह तारीख 26 नवंबर, 1949 है।

प्रस्तावना से संबंधित प्रमुख शब्द

- **संप्रभुता** - पूर्ण संप्रभु सरकार वह है जो किसी अन्य शक्ति द्वारा नियंत्रित नहीं होती है तथा अपने आंतरिक या बाहरी मामलों के निष्पादन में स्वतंत्र है। संप्रभु हुए बिना किसी देश का अपना संविधान नहीं हो सकता। भारत एक संप्रभु देश है। यह किसी भी बाहरी नियंत्रण से मुक्त है।
- **समाजवादी** - मूल संविधान का हिस्सा नहीं।
 - 42वें संशोधन अधिनियम द्वारा जोड़ा गया।



- आर्थिक नियोजन के संदर्भ में उपयोग किया जाता है।
- असमानताओं को दूर करने, सभी के लिए न्यूनतम बुनियादी आवश्यकताओं का प्रावधान, समान काम के लिए समान वेतन जैसे आदर्शों को प्राप्त करने की प्रतिबद्धता।
- **धर्मनिरपेक्षता** - 42वें संविधान संशोधन अधिनियम 1976 द्वारा जोड़ा गया।
 - भारत न तो धार्मिक है, न अधार्मिक है और न ही धर्म विरोधी है।
 - कोई राष्ट्रीय धर्म नहीं- राज्य किसी विशेष धर्म का समर्थन नहीं करता है।
- **लोकतांत्रिक गणराज्य** - सरकार लोगों द्वारा चुनी जाती है और लोगों के प्रति जिम्मेदार और जवाबदेह होती है।
 - लोकतांत्रिक प्रावधान - सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, चुनाव, मौलिक अधिकार और जिम्मेदार सरकार।
 - गणतंत्र - राज्य का निर्वाचित प्रमुख (राष्ट्रपति → प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित) ब्रिटेन जैसा वंशानुगत शासक नहीं।
- **न्याय** - लोगों को भोजन, वस्त्र, आवास, निर्णय लेने में भागीदारी और मनुष्य के रूप में सम्मान के साथ जीने के बुनियादी अधिकारों के संदर्भ में वे क्या हकदार हैं।
 - रूसी क्रांति (1917) से न्याय के तत्वों को लिया गया है।
 - न्याय के तीन आयाम- सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक।
 - **सामाजिक न्याय** - जाति, रंग, नस्ल, धर्म, लिंग आदि के आधार पर बिना किसी सामाजिक भेद के सभी नागरिकों के साथ समान व्यवहार।



- **आर्थिक न्याय** - आर्थिक कारकों पर गैर-भेदभाव।

सामाजिक न्याय + आर्थिक न्याय =
'वितरणात्मक न्याय'

- **राजनीतिक न्याय** - सभी नागरिकों को समान राजनीतिक अधिकार, सभी राजनीतिक कार्यालयों में समान पहुँच और सरकार तक अपनी बात रखने का अधिकार।
- **स्वतंत्रता** - विचार और अभिव्यक्ति की व्यक्तियों की गतिविधियों पर प्रतिबंध की अनुपस्थिति और साथ ही व्यक्तिगत व्यक्तित्व के विकास के अवसर प्रदान करना।
 - फ्रांसीसी क्रांति (1789-1799) से लिया गया।

- **समानता** - समाज के किसी भी वर्ग के लिए विशेष विशेषाधिकारों का अभाव और बिना किसी भेदभाव के सभी व्यक्तियों के लिए पर्याप्त अवसरों का प्रावधान।
 - समानता के तीन आयाम- नागरिक, राजनीतिक और आर्थिक।
- **बंधुत्व** - भाईचारे की भावना, एकल नागरिकता की व्यवस्था और अनुच्छेद 51A (मौलिक कर्तव्य) द्वारा बंधुत्व की भावना को बढ़ावा देता है।

संविधान के एक भाग के रूप में प्रस्तावना

बेरुबारी संघ बनाम अज्ञात मामला, 1960	केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य मामला, 1973	केंद्र सरकार बनाम एलआईसी ऑफ इंडिया मामले, 1995
सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि 'प्रस्तावना निर्माताओं के दिमाग को खोलने की कुंजी है' लेकिन इसे संविधान का हिस्सा नहीं माना जा सकता। इसलिए यह कानून की अदालत में लागू करने योग्य नहीं है।	सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि "संविधान की प्रस्तावना को अब संविधान का हिस्सा माना जाएगा। प्रस्तावना सर्वोच्च शक्ति या किसी प्रतिबंध या निषेध का स्रोत नहीं है, लेकिन यह संविधान की विधियों और प्रावधानों की व्याख्या में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।"	सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि प्रस्तावना संविधान का अभिन्न अंग है, लेकिन भारत में न्याय के न्यायालय में सीधे लागू करने योग्य नहीं है।



संवैधानिक प्रावधान

- भारतीय संविधान के भाग III में अनुच्छेद 12 - 35
- स्रोत- संयुक्त राज्य अमेरिका का संविधान (फ्रांसीसी संविधान से भी कुछ प्रावधान लिए गए है।)

अनुच्छेद	प्रावधान
अनुच्छेद 12	परिभाषा (राज्य की परिभाषा)
अनुच्छेद 13	मौलिक अधिकारों के साथ कानून।
अनुच्छेद 14-18	समानता का अधिकार
अनुच्छेद 19-22	स्वतंत्रता का अधिकार
अनुच्छेद 23-24	शोषण के विरुद्ध अधिकार
अनुच्छेद 25-28	धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
अनुच्छेद 29-30	सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार
अनुच्छेद 31	संपत्ति का अधिकार (हटा दिया गया)
अनुच्छेद 32-35	संवैधानिक उपचार का अधिकार

मौलिक अधिकारों की उत्पत्ति

- **पहली मांग-** भारत का संविधान विधेयक, 1895 में बाल गंगाधर तिलक द्वारा या स्वराज विधेयक
- **प्रेरणा-** इंग्लैंड बिल ऑफ राइट्स (1689), यूनाइटेड स्टेट्स बिल ऑफ राइट्स और फ्रांस की डिक्लेरेशन ऑफ द राइट्स ऑफ मैन।
- **पहला प्रस्ताव-** नेहरू आयोग 1928 [संविधान सभा की माँग, सार्वभौमिक वयस्क मत द्वारा]
- **ग्रहण-** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1931 में मौलिक नागरिक अधिकारों के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक अधिकारों की रक्षा के लिए संकल्प पारित किया।
- संविधान में समावेश: मसौदा समिति (Drafting Committee) द्वारा

अधिकारों के प्रकार

प्राकृतिक अधिकार

- सार्वभौमिक अधिकार, मानव स्वभाव का हिस्सा और प्रत्येक व्यक्ति में निहित।
- कानून द्वारा प्रदत्त नहीं, बल्कि, वे इसके द्वारा पहचाने और लागू किए जाते हैं।
- जैसे- जीने का अधिकार।

मानव अधिकार

- प्राकृतिक अधिकारों के समान ही सार्वभौमिक है और मानव प्रकृति में निहित हैं।
- एक सम्मानजनक मानव जीवन के लिए आवश्यक है और सामाजिक, राजनीतिक या अन्य कारकों की परवाह किए

बिना इसका आनंद लिया जा सकता है।

- एक व्यक्ति द्वारा बनाए रखा जाता है क्योंकि वह एक इंसान है।
- मानवाधिकारों की सार्वभौमिक रूप से घोषणा को संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1948 में अपनाया गया था।

नागरिक अधिकार

- वे अधिकार जो किसी देश के नागरिकों को प्राप्त हैं, देश के कानून द्वारा प्रदत्त हैं।
- एक देश से दूसरे देश में भिन्न हो सकते हैं।

मौलिक अधिकार

- नागरिक अधिकार संविधान द्वारा सुनिश्चित किए गए हैं और सीधे सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संरक्षण प्राप्त हैं।

मौलिक अधिकारों की विशेषताएं

- **संविधान का अभिन्न अंग** - एक साधारण कानून द्वारा नहीं छीना जा सकता।
- **व्यापक और विस्तृत** - प्रत्येक लेख को इसके दायरे और सीमा के साथ वर्णित किया गया है।
- **सामाजिक और आर्थिक अधिकारों का अभाव** - केवल नागरिक अधिकारों की गारंटी देता है, काम का अधिकार, स्वास्थ्य का अधिकार जैसे अधिकार शामिल नहीं हैं।
- **अधिकार योग्य हैं:** अस्पृश्यता के विरुद्ध अधिकार को छोड़कर अन्य पूर्ण नहीं, वे योग्य हैं व सीमाओं और उचित प्रतिबंधों के साथ हैं।
- **अधिकारों की प्रवर्तनीयता** - न्यायोचित अधिकार अर्थात् यदि इनमें से किसी भी अधिकार का उल्लंघन होता है, तो व्यक्ति को सर्वोच्च न्यायालय में जाने का अधिकार है।
- **मौलिक अधिकार संशोधनीय हैं** - मूल रूप से स्थायी नहीं, इन्हें संसद द्वारा संशोधित किया जा सकता है।
- **अधिकारों के निलंबन का प्रावधान** - आपातकाल के दौरान निलंबित।
- **मौलिक अधिकारों की संवैधानिक श्रेष्ठता** - सामान्य कानूनों और डीपीएसपी से बेहतर।
- **अल्पसंख्यकों के लिए विशेष अधिकार** - विभिन्न प्रकार के अल्पसंख्यकों को कुछ विशेष अधिकारों की गारंटी दी गई है।
- **कोई प्राकृतिक अधिकार नहीं** - संविधान प्राकृतिक अधिकारों या अनगिनत अधिकारों को मान्यता नहीं देता है।
- **संपत्ति का अधिकार मौलिक अधिकार नहीं** - सामाजिक-आर्थिक सुधारों को लागू करने के रास्ते में



संपत्ति के अधिकार द्वारा उत्पन्न बाधाओं के कारण इसे मौलिक अधिकारों से हटा दिया गया था।

अनुच्छेद 12: राज्य की परिभाषा

- अनुच्छेद 12 - राज्य में शामिल हैं-
 - भारत की सरकार और संसद
 - प्रत्येक राज्य की सरकार और विधानमंडल
 - भारत के क्षेत्र के भीतर या भारत सरकार के नियंत्रण में सभी स्थानीय या अन्य प्राधिकरण

अनुच्छेद 13: मौलिक अधिकारों से असंगत या उनको कम करने वाले कानून

- 'कानून' शब्द में शामिल हैं
 - संसद या राज्य विधान मंडलों द्वारा अधिनियमित स्थायी कानून।
 - राष्ट्रपति या राज्य के राज्यपालों द्वारा जारी अध्यादेश जैसे अस्थायी कानून।
 - आदेश, उप-नियम, नियम, विनियम या अधिसूचना जैसे प्रत्यायोजित विधान (कार्यकारी विधान) की प्रकृति में सांविधिक उपकरण या साधन।
 - कानून के गैर-विधायी स्रोत, अर्थात् कानून का बल रखने वाली प्रथा या रूढ़ि।
- केवल एक कानून ही नहीं, बल्कि उपरोक्त में से किसी को भी मौलिक अधिकार के उल्लंघन के रूप में अदालत में चुनौती दी जा सकती है और इसलिए इसे शून्य घोषित किया जा सकता है।
- अनुच्छेद 13 निर्दिष्ट करता है कि एक संवैधानिक संशोधन एक कानून नहीं है और इसलिए इसे न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती।
 - केशवानंद भारती मामला (1973) - उच्चतम न्यायालय ने निर्णय दिया कि संवैधानिक संशोधन को चुनौती दी जा सकती है।
 - यदि यह मौलिक अधिकार का उल्लंघन करता है जो संविधान के 'मूल ढांचे' का हिस्सा है और इसलिए इसे असंवैधानिक घोषित किया जा सकता है।

छह मौलिक अधिकार

1. समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14-18)



अनुच्छेद 14- कानून के समक्ष समानता और कानूनों का समान संरक्षण

राज्य किसी भी व्यक्ति को कानून के समक्ष समानता या भारत के क्षेत्र में कानूनों के समान संरक्षण से वंचित नहीं करेगा।

कानून के समक्ष समानता:

- इंग्लिश कॉमन लॉ से अपनाया गया।

- राज्य को व्यक्तियों के बीच भेदभाव करने से रोकता है।
- किसी भी व्यक्ति के लिए किसी विशेषाधिकार की अनुपस्थिति।
- सामान्य कानून अदालतों द्वारा प्रशासित भूमि के नियमित कानून के लिए सभी वर्गों को समान रूप से प्रस्तुत करना।
- कोई भी कानून से ऊपर नहीं है और यह कि हर कोई एक ही अधिकार क्षेत्र के अधीन है।
- प्रो. डाइसी ने 'कानून का शासन' की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसने कानून के समक्ष समानता की अवधारणा को जन्म दिया।

कानून का शासन

कानून समीकरण का नियम

कानून का शासन शांतिपूर्ण, न्यायसंगत और समृद्ध समाज के विकास की नींव है। हम मानते हैं कि चार प्रमुख क्षेत्र हैं जो कानून के संरक्षण का निर्माण करते हैं

कानून के तहत समानता + कानून की पारदर्शिता + स्वतंत्र न्यायपालिका + सुलभ कानूनी उपाय

= कानून का शासन

- उच्चतम न्यायालय ने माना कि 'कानून का नियम' जैसा कि अनुच्छेद 14 में सन्निहित है, संविधान की एक 'बुनियादी विशेषता' है।
 - इसे संशोधन द्वारा भी नष्ट नहीं किया जा सकता।

कानूनों का समान संरक्षण

- स्रोत- यूएसए का संविधान।
- समान परिस्थितियों में समान व्यवहार सुनिश्चित करता है।
- लोगों को उनके सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्तर पर उपलब्धि के आधार पर अलग तरह से व्यवहार करने में सक्षम बनाता है।
- समाज के सबसे कमजोर सदस्यों के लिए 'सकारात्मक कार्रवाई' के साथ-साथ विभिन्न आय समूहों के लिए विभिन्न कर दरों का प्रावधान करता है।

समानता के नियम के अपवाद

- राष्ट्रपति और राज्यपालों को उन्मुक्ति
 - अपने कार्यालय की शक्तियों और कर्तव्यों का प्रयोग करते हुए
 - अपने कार्यकाल के दौरान किसी भी आपराधिक मुकदमे से।
 - उनके कार्यकाल के दौरान दीवानी कार्यवाही से।
- विदेशी संप्रभु और राजदूत।

अनुच्छेद 15- कुछ आधारों पर भेदभाव पर प्रतिषेध

अनुच्छेद 15(1)

- राज्य किसी नागरिक के साथ केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं करेगा।



- अन्य आधारों पर भेदभाव निषिद्ध नहीं है।

अनुच्छेद 15(2)

- कोई भी नागरिक, केवल धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग, जन्म स्थान या इनमें से किसी के आधार पर, किसी भी विकलांगता, दायित्व, प्रतिबंध या शर्त के अधीन नहीं होगा।
- दुकानों, सार्वजनिक रेस्तरां, होटलों और सार्वजनिक मनोरंजन के स्थानों तक पहुंच या कुओं, टैंकों, स्नान घाटों, सड़कों और सार्वजनिक रिसॉर्ट के स्थानों का उपयोग पूर्ण या आंशिक रूप से राज्य निधि से किया जाता है।
- यह धारा सरकारी और निजी दोनों व्यक्तियों द्वारा भेदभाव को प्रतिबंधित करती है, जबकि पिछली धारा केवल सरकार द्वारा भेदभाव को प्रतिबंधित करती है।

भेदभाव प्रतिषेध नियम के अपवाद:

- **महिलाओं और बच्चों के लिए विशेष प्रावधान**
 - जैसे स्थानीय निकायों में महिलाओं के लिए सीटों का आरक्षण, विशेष योजनाएँ व कार्यक्रम।
- **सामाजिक और शैक्षिक रूप से वंचित व्यक्तियों के साथ-साथ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की प्रगति के लिए प्रावधान।**
 - जैसे सार्वजनिक शिक्षण संस्थानों में सीटों का आरक्षण या शुल्क में छूट।
- **नागरिकों के किसी भी ईडब्ल्यूएस की उन्नति के लिए विशेष प्रावधान।**
 - शिक्षण संस्थानों में प्रवेश हेतु ऐसे वर्गों के लिए 10% तक सीटों के आरक्षण का प्रावधान

सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्ग

- संविधान में परिभाषित नहीं है।
- **"पिछड़ा वर्ग" - अनुच्छेद 15(4), 16(4) और 29(2)।**
- संविधान राज्य के इन वर्गों के नागरिकों को शिक्षा, रोजगार आदि में विशेष रियायतें देने का अधिकार देता है, लेकिन स्पष्ट रूप से यह नहीं बताता कि कौनसा वर्ग पिछड़ा है।
- शब्द/मानदंड को परिभाषित करने की जिम्मेदारी अनुच्छेद 338 व 340 के तहत स्थापित आयोगों की है। क्योंकि पिछड़ेपन में योगदान देने वाली परिस्थितियाँ अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग होती हैं।
- आयोग की सिफारिशों के आधार पर, राष्ट्रपति पिछड़े वर्गों को निर्दिष्ट कर सकते हैं - न्यायिक समीक्षा के अधीन निर्णय।
- उच्चतम न्यायालय ने कहा है कि 'पिछड़ापन', जैसा कि अनुच्छेद 15(4) में परिभाषित किया गया है। 15(4) सामाजिक और शैक्षिक दोनों होना चाहिए।

शैक्षणिक संस्थानों में ओबीसी के लिए आरक्षण

- केंद्रीय शैक्षणिक संस्थान (प्रवेश में आरक्षण) अधिनियम, 2006 - 93वें संशोधन अधिनियम, 2005 के प्रावधानों को प्रभावित करते हुए- सभी केंद्रीय उच्च शिक्षण संस्थानों (आईआईटी और आईआईएम सहित) में ओबीसी उम्मीदवारों के लिए 27% का कोटा अलग रखा गया।
- सर्वोच्च न्यायालय द्वारा संशोधन अधिनियम और ओबीसी कोटा अधिनियम दोनों को बरकरार रखा गया था।
 - कोर्ट ने केंद्र सरकार से ओबीसी के 'क्रीमी लेयर' (उन्नत वर्ग) को कानून के कार्यान्वयन से छूट देने को कहा।

शैक्षणिक संस्थानों में ईडब्ल्यूएस के लिए आरक्षण:

- 103वाँ संशोधन अधिनियम: शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश में ईडब्ल्यूएस को 10% आरक्षण प्रदान करता है।
- ईडब्ल्यूएस का लाभ उन व्यक्तियों द्वारा उठाया गया जो एससी, एसटी और ओबीसी के लिए आरक्षण की किसी भी मौजूदा योजना के अंतर्गत नहीं आते हैं।

मंडल आयोग की रिपोर्ट

- **नियुक्ति - 1979**
- **अध्यक्ष - बी.पी. मंडल**
- **कार्य - सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों की स्थितियों का मूल्यांकन करना और उनकी प्रगति के तरीकों की सिफारिश करना।**
- **अवलोकन - अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति को छोड़कर, 3743 जातियों को सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े के रूप में पहचाना गया, जो आबादी का लगभग 52% है।**
- **सिफारिशें - ओबीसी के लिए 27% सरकारी पदों पर आरक्षण, सभी के लिए समग्र आरक्षण (एससी, एसटी और ओबीसी) को 50% तक लाना।**

आगामी विकास

- 1991- नरसिम्हा राव सरकार ने दो बदलाव पेश किए:
 - 27% के ओबीसी कोटे में गरीब वर्ग को वरीयता।
 - उच्च जातियों के गरीब (आर्थिक रूप से पिछड़े) वर्गों के लिए अन्य सरकारी नौकरियों में 10% का आरक्षण, जो आरक्षण की किसी भी मौजूदा योजना में शामिल नहीं है।
- सर्वोच्च न्यायालय की कार्रवाई (1992)- उच्च जातियों के गरीब वर्गों के लिए 10% के अतिरिक्त आरक्षण को खारिज



करते हुए, इसने कुछ शर्तों के साथ ओबीसी के लिए 27% आरक्षण की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखा।

- ओबीसी (क्रीमी लेयर) के बीच उन्नत वर्गों को आरक्षण मानदंड से बाहर रखा गया।
- पदोन्नति में कोई आरक्षण नहीं, केवल नियुक्तियों में।
- कुछ शर्तों को छोड़कर कुल मिलाकर आरक्षित कोटा 50% से अधिक नहीं होगा।
- खाली (बैकलॉग) पदों के लिए, 'कैरी फॉरवर्ड रूल' लागू होता है- इसे 50% नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए।
- ओबीसी के अति-समावेशन और कम-समावेशन की चिंताओं की जाँच के लिए एक स्थायी वैधानिक प्राधिकरण का गठन किया जाना चाहिए।
- **सरकार की कार्रवाई**
 - **राम नंदन समिति** - ओबीसी के क्रीमी लेयर का निर्धारण करने के लिए। इसके द्वारा 1993 में प्रस्तुत रिपोर्ट को स्वीकार कर लिया गया।
 - **राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (1993)** - नौकरी में आरक्षण के उद्देश्य से पिछड़े वर्गों की सूची से किसी भी वर्ग के लोगों को कम शामिल करने, अधिक शामिल करने या बाहर करने के आरोपों की जाँच करना।
 - **77वाँ संशोधन अधिनियम 1995** - पदोन्नति में आरक्षण पर फैसले को पलटने के लिए, इसमें अनुच्छेद 16 में एक नया प्रावधान शामिल किया गया जो राज्य को राज्य सेवाओं में कम प्रतिनिधित्व वाले एससी और एसटी के पक्ष में राज्य के तहत किसी भी सेवा में आरक्षण की अनुमति देता है।
 - **81वाँ संशोधन अधिनियम 2000** - अनुच्छेद 16 में एक नया प्रावधान सम्मिलित करके बैकलॉग रिक्तियों पर निर्णय को उलट दिया गया, जो राज्य को एक वर्ष की भरी न जा सकी आरक्षित रिक्तियों को भविष्य के किसी भी वर्ष या वर्षों में भरी जाने वाली रिक्तियों के एक अलग वर्ग के रूप में मानने की अनुमति देता है। संक्षेप में, यह बैकलॉग रिक्तियों में 50% आरक्षण की सीमा को समाप्त करता है।
 - **76वाँ संशोधन अधिनियम 1994** - 1994 के तमिलनाडु आरक्षण अधिनियम को न्यायिक समीक्षा से बचाने के लिए इसे नौवीं अनुसूची में रखा गया क्योंकि इसमें 69% आरक्षण का प्रावधान था, जो 50 प्रतिशत की सीमा से कहीं अधिक था।

अनुच्छेद 16- सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता

- केवल धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, वंश, जन्म स्थान या निवास के आधार पर किसी भी नागरिक को राज्य के तहत लोक नियोजन में अयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता है।

सार्वजनिक रोजगार में अवसर की समानता के नियम के अपवाद

- संसद के पास राज्य, केंद्र शासित प्रदेश, नगरपालिका सरकार या अन्य निकाय में विशिष्ट नौकरियों या नियुक्तियों के लिए निवास को एक शर्त बनाने की शक्ति है।
 - **आंध्र प्रदेश और तेलंगाना को छोड़कर किसी भी राज्य के लिए ऐसा कोई प्रावधान नहीं है** क्योंकि 1957 का लोक रोजगार (निवास के रूप में आवश्यकता) अधिनियम वर्ष 1974 में ही समाप्त हो गया था।
- **राज्य पिछड़े वर्ग के लिए नियुक्तियां और पद आरक्षित कर सकता है जिनका राज्य में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं है।**
- **किसी धार्मिक या सांप्रदायिक संस्था के पद का धारक या उसके शासी निकाय का सदस्य उस धर्म या संप्रदाय का होना चाहिए।**
- राज्य ने आर्थिक रूप से वंचित व्यक्तियों के लिए आरक्षित की जाने वाली नियुक्तियों या पदों में **10% (वर्तमान आरक्षण के अतिरिक्त) के आरक्षण का प्रावधान करने की अनुमति दी।**

सार्वजनिक रोजगार में ईडब्ल्यूएस का आरक्षण

- 2019 के 103वें संशोधन अधिनियम के तहत आरक्षण।
- भारत सरकार में सिविल पदों और सेवाओं में आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (ईडब्ल्यूएस) को 10% आरक्षण।
- **लाभार्थी- ईडब्ल्यूएस से संबंधित व्यक्ति जो एससी, एसटी और ओबीसी के लिए आरक्षण की किसी भी मौजूदा योजना के अंतर्गत नहीं आते हैं। (अनुच्छेद 15 के तहत)**
- वैज्ञानिक और तकनीकी पदों को इस आरक्षण से बाहर रखा गया है।
 - पद संबंधित सेवा के ग्रुप ए में निम्न ग्रेड से ऊपर की ग्रेड में होने चाहिए।
 - कैबिनेट सचिवालय आदेश (1961) के अनुसार वैज्ञानिक या तकनीकी के रूप में वर्गीकृत, जिसके अनुसार वैज्ञानिक और तकनीकी पद जिनके लिए प्राकृतिक विज्ञान या सटीक विज्ञान या अनुप्रयुक्त विज्ञान या प्रौद्योगिकी में योग्यता निर्धारित है और जिनके पदाधिकारियों को करना है उस ज्ञान का उपयोग अपने कर्तव्यों के निर्वहन में करें।
 - पद अनुसंधान करने या अनुसंधान के आयोजन, मार्गदर्शन और निर्देशन के लिए होना चाहिए।

अनुच्छेद 17- अस्पृश्यता का उन्मूलन

- इसके तहत अस्पृश्यता का अंत किया गया है और किसी भी रूप में इसका अभ्यास वर्जित है।
- अस्पृश्यता से उत्पन्न होने वाली किसी भी अक्षमता को लागू करना कानून के अनुसार दंडनीय अपराध होगा।
- संसद को मौलिक अधिकारों (अनुच्छेद 35) के उल्लंघन पर दंड के लिए कानून बनाने का अधिकार है और संसद ने 1955 के अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम को पारित किया, संशोधित किया गया और 1976 में नागरिक